कथा साहित्य में स्त्रीविमर्श तेलुगू कहानी 'थारवाहिका'

जे.जानकी
अध्यक्ष हिंदी विभाग]
के.बी.एन.कॉलेज (ऑटोनॉमस) विजयवाड़ा.

थारवाहिका श्रीमति पी. सत्यवति की कहानी है जो 2011 में लिखी गयी हैं। दुर्गा एक आपार्टमेंट के वाचमन की पत्नी है। दो बच्चों की माँ है। अपने परिवार केलिए सबेरे उठने से लेकर शामतक मेहनत करती ही रहती है। अपने पति के काम भी वही करती आती है। एक यंत्र के सामन काम करती हुई वह अपने पारिवारिक जीवन को सावधाने से आगे बढ़ाती है। नाम केलिए ही पति वामचान है वाचमान के सारे काम दुर्गा ही पूरी करती है। वाचमन पानकालु के पिता अपनी थोड़ी बहुत जायदाद अपनी पुत्री के नाम लिखकर पुत्री का विवाह अने भानजे से करवाता है और समझता है कि अपने अंतिम समय आराम से बेटी के यहाँ गुजर जायेगा। लेकिन दामाद इस भार दाने केलिए तैयार नहीं होता। इसलिए उसे लाचार होकर अपने बेटे के यहाँ आना पड़ता है। उसे अपनी बहु दुर्गा से डर है कि उसके मुह से कौन सी बात निकलेगी? और अपनी गलती की आलोचना करेगी। पिता का आगमन पानकालु को पसंद नहीं। उसका डर है बिल्डर क्या कहेगा? लेकिन दुर्गा अपने ससुर के प्रति अपना कर्तव्य निभाती हुई उसे भी अपना पारिवारिक सदस्य बनाती है। एक सप्ताह के बाद बिल्डर पूछता है कि क्या यह बूढ़ा भी आपके साथ रहेगा तो पानकालु ने कहा जी नहीं वह चले जायेगा। लाचार होकर पानकालु के पिता एक दिन रात समय नदी में कूदकर अपनी इहलीला समाप्त करने के उद्देश्य से अंधकार में बाहर निकलने को तैयार होता है। इस वक्त दुर्गा उसे रोक लेती है और कहती है कि अगर वह जाने को कहता तो तुम्हें जाना ही है क्या?

इसीसे कहानी का अंत होता है। इसमें दुर्गा नारीवाद का प्रतीत पात्र है। वह पुरूषाधिकता पर विजय प्राप्त करती है। सबलाकरण स्त्रीवाद की शक्ति है। प्रत्येक श्रेणी की स्त्री केलिए अलग अलग समस्थाएँ, आंकांक्षायें होती है। इसमें दुर्गा शामिक वर्ग की प्रतिनिधि है। पुरूष वर्चस्व की सीधी चुनौती उसकी बातों में मिलती है। निर्णयाधिकार की क्षमता से वह अपने पति की आलोचना करती हुई अपने ससुर को अपने परिवार के सदस्य बनाने का निर्णय लेती है। इस प्रकार की चुनौती के लिए विवेक संपन्ता, दूरदर्शा, आनमबोध और आर्थिक स्वाधीनता का योग आवश्यक है। इसमें दुर्गा दूरदर्शा है। इसलिए वह कहती है कि नुव्वु एमंता मूडु काला मुसलिवाडिवि कावु, कडुपु निंडा तिंटे सत्तु वोस्तादि ऐवो सिन्न पनुलु चेसुको लेक पोवु पोई पडुको अन्नमाटल्लो

दूरदर्शित, विवेक संपन्नता दिखायी पड़त है। उसमें आनमबोध भी है। वह समझती है कि परिवार का अर्थ पति तक ही सीमित नहीं। पति के पिता का भी देखभाल अपनी जिम्मेदारी है।

पानकालु से ज्यादा वह आर्थिक स्वाधीनता वाली है। इसलिए ससुर के विषय में निर्णय लेने का अधिकार स्वयं लेती है। अपने प्रति अन्याय के खिलाफ आवाज तक भी न उठा सकने की दशा से इस कहानी में दुर्गा के द्वारा स्त्री का स्वयं निर्णयाधिकार की क्षमता दिखायी गयी है। स्वयं निर्णयाधिकरी केलिए आवश्यक क्षमता शिक्षा लेकिन व्यवहारिक शिक्षा के महिर है। इसलिए दी अपने पति जब पीकर सोजाता है इस बात की शंका किसी को नहीं होने देती। इतना ही नही जब अपार्टमेंट की एक नारी उनकी तुम्हारी आमदनी आराम की कमाई है। अपार्टमेंट के अंदर ही आराम से तुम बहुत कमा रही हो तो वह जवाब देती है कि हाँ मैं इस आमदनी को स्विसबैंक में जमा कर रही हूँ दुर्गा काम काज करती हुई टी. वि. में समाचार और उपयोगी विषयों की जानकारी रखती है जो

लौकिक शिक्षा की प्राप्ति है। इसके अलावा उसमें जोरितम उठाने की क्षमता भी है। इसलिए वह बिल्डर से भी नहीं डरती।

स्त्री विमर्श या नारी वाद का अर्थ पूर्ण स्वतंत्र नहीं बलि पितृ सत्ता के विरूद्ध आवाज उठानी है। न कि पुरुषों के प्रति द्वेष भावना रखना। इसमें दुर्गा स्वावलंबी, व्यवहार कुशल, आत्मनिर्भर होने पर भी अपने पति पानकालु के प्रति द्वेष भावना नहीं रखती और पश्चमी स्त्रीवादी भावनाओं को भी नहीं मानती। पुराने भावों को मरमत्त करने के पक्ष में है। इसलिए अपने मामा से कहती है अगर तुम अपनी पुत्री को स्वावलंबन की शिक्षा देते तो आज तुम्हें ये दिन देखने नहीं पड़ेगे। स्त्री स्वावलंबन के प्रति पुरुष की नकारानमकता का वह प्रश्न करती है। उसका स्त्रीवाद उग्र स्त्रीवाद नहीं। वह समस्या को पहचान लेती है। उसमें समस्या सुलझाने केलिए द्वशनमकता को नहीं योगात्मकता का मार्ग अपनाती है। फिर भी उसमें सफलता पाती है। पुरूष की प्रवृत्ति जिसे पौरूष का अर्थ मानता है पुरूष उसको बदलने में तैयार हुआ नहीं दिखायी पड़ रहा है। क्योंकि ऐसा करना वह अपने वर्चस्व की हानि मानता है। इस कहानी में यह बात पानकालु के पिता की बातों से मालूम होती है। वह अपने को सोने केलिए आचय दिये अपार्टमेंट की मालिकिन से कहता है ऐंचेसिनन्ना ना आडोल्ले चैयालम्मा ना मिदा ना कोडुकुक्की प्रेम उनदी दीन्नोटी किदडिसी उंडु नान्ना अनाडु ऐमन्ना अदे अनाली। इसमें पानकालु के पिता की भावना है कि अपना बेटा तो अच्छा है। दुर्गा के स्वभाव से डर कर वह अपने पिता को आशस देने में डरता है। इसमें यह स्पष्ट होता है कि पुरूष आज भी स्त्री की शक्ति, क्षमता पहचानने में गलती कर रहा है। यह गलती अपने अहं को संतृप्त करने की चेष्टा मात्र है। इसी भावना को कहानी लेखिका अपने शब्दों में व्यक्त करती है मुसलायनकु कोडली नोरू लंडु गटिपड्डु बादम - पेंकुला कनिपिस्तुंदि कानी दान्नी कोटी लोपली पप्पु चूसे ओपिका ल्लेदु। बहुसा अतनि दृष्टि कूडा ऐंडि पेंकु कटि पोईयुंदि। -

इसमें पुरूषाहंकार की प्रवृत्ति पर आलोचना की गयी है और सूचना दी गयी है कि इसको बदलने की आवश्यकता बताते हुए आज की स्थिति के बारे में बताया गया कि पानकालु को दुगा का स्वभाव कटु लगता है। लेकिन उस कटु बातें और व्यवहार सही मन से परखा जाय तो अंदर का स्वच्छा मन, प्यार, आत्मीयता दिखायी पड़ती है।